Journal of Advances and Scholarly Research In Allied Education
Vol.20, Issue No. 4, October-2023, ISSN 2230-7540

संस्कृत महाकाव्यों में माँ पार्वती के आदर्श स्वरूप एवं उनकी सांस्कृतिक महत्ता का अध्ययन

रितु त्रिपाठी[1]*, डॉ. आशीष तिवारी[2]

[1] शोधार्थी, श्रीकृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र. भारत

awasthirituvivek@gmail.com

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, श्रीकृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र. भारत

सारांश: यह शोध-पत्र संस्कृत महाकाव्यों में माँ पार्वती के आदर्श स्वरूप तथा उनकी सांस्कृतिक महत्ता का अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय साहित्य परंपरा में माँ पार्वती केवल एक देवी के रूप में नहीं, बल्कि शक्ति, त्याग, तपस्या और आदर्श नारीत्व के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इस अध्ययन में विशेष रूप से कालिदास के रघुवंश और कुमारसंभव, तथा अन्य प्रमुख संस्कृत ग्रंथों एवं पुराणों के संदर्भों के आधार पर पार्वती के विविध स्वरूपों का विश्लेषण किया गया है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार माँ पार्वती का चरित्र भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति, धैर्य और समर्पण का आदर्श प्रस्तुत करता है। उनके तप, शिव से विवाह और गृहस्थ जीवन में उनकी भूमिका सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि संस्कृत साहित्य में पार्वती केवल पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और दार्शनिक दृष्टिकोण की वाहक हैं। शोध की पद्धति मुख्यत: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। कहा जा सकता है कि माँ पार्वती का आदर्श स्वरूप भारतीय सांस्कृतिक विरासत को गहराई से प्रभावित करता है और आज भी सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

मुख्य शब्द: महाकाव्य, माँ पार्वती, भारतीय संस्कृति, सामाजिक, नैतिक मूल्य

1. परिचय

पार्वती (संस्कृत: पार्वती, IAST: Pārvatī), उमा (संस्कृत: उमा, IAST: Umā) अथवा गौरी (संस्कृत: गौरी, IAST: Gaurī) हिंदू धर्म में एक प्रमुख देवी हैं, जो उर्वरता, प्रेम, सौंदर्य, साहस, सौहार्द, विवाह, संतान और भक्ति की देवी मानी जाती हैं आर्थर, एल. 2009)। इसके साथ ही वे दैवी शक्ति और पराक्रम की प्रतीक भी हैं। पार्वती देवी भुवनेश्वरी के अनेक अवतारों में से एक हैं। लक्ष्मी और सरस्वती के साथ मिलकर पार्वती हिंदू देवी त्रय — त्रिदेवी — का निर्माण करती हैं, जो सृजन, संरक्षण और ज्ञान की देवी स्वरूप हैं (एवलॉन, ए. 1913)।

पार्वती हिंदू भगवान शिव की पत्नी हैं। वह शिव की पहली पत्नी सती का पुनर्जन्म हैं, जिन्होंने एक यज्ञ (अग्नि-बलिदान) के दौरान खुद को बलिदान कर दिया था। पार्वती पर्वत राजा हिमवान और रानी मैना (मैनावती) की पुत्री हैं। पुराणों में उन्हें नदी देवी गंगा और संरक्षक भगवान विष्णु की बहन भी बताया

गया है। वह शिव और शक्ति की ऊर्जा की तरह एक पुरुष और एक महिला के बीच दिव्य ऊर्जा है। उनकी पूजा ज्यादातर शैव परंपरा द्वारा की जाती है। देवी पार्वती आदि पराशक्ति भुवनेश्वरी का अवतार हैं। पार्वती अपने पिछले जन्म में सती थीं। सती भी आदि पराशक्ति का प्रत्यक्ष अवतार थीं (एलन, पाउला गन। 1986)। हालाँकि, सती की मृत्यु हो गई और उनका पुनर्जन्म पार्वती के रूप में हुआ। पार्वती को दयालु और प्यार करने वाली माँ देवी के रूप में दिखाया गया है। वह विभिन्न रूप ले सकती हैं और उनके नौ रूपों को नवदुर्गा रूपों के रूप में जाना जाता है। कई अन्य नामों से जानी जाने वाली, वह सर्वोच्च हिंदू देवी महादेवी का सौम्य, पोषण करने वाला अवतार हैं और शक्तिवाद नामक देवी-उन्मुख शक्ति संप्रदाय की केंद्रीय देवताओं में से एक हैं। शैव धर्म में, वह शिव की पुन: सृजनात्मक ऊर्जा और शक्ति है, और वह एक बंधन का कारण है जो सभी प्राणियों को जोड़ता है और उनकी आध्यात्मिक मुक्ति का साधन है। उनके और शिव को समर्पित हिंदू मंदिरों में, उन्हें प्रतीकात्मक रूप से अर्घा के रूप में दर्शाया जाता है। वह प्राचीन भारतीय साहित्य में व्यापक रूप से पाई जाती है, और उनकी मूर्तियाँ और प्रतिमाएँ पूरे दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में हिंदू मंदिरों की शोभा बढ़ाती हैं (किन्सले, डेविड 1986)।

पर्वत को पर्वतों का स्वामी और हिमालय का मानवीकरण माना जाता है; पार्वती का अर्थ है "पहाड़ की बेटी"। हिंदू साहित्य में पार्वती को कई नामों से जाना जाता है। अन्य नाम जो उन्हें पहाड़ों से जोड़ते हैं वे हैं शैलजा (पहाड़ों की बेटी), अद्रिजा या नागजा या शैलपुत्री (पहाड़ों की बेटी), हैमावती (हिमवान की बेटी), देवी माहेश्वरी, और गिरिजा या गिरिराजपुत्री (पहाड़ों के राजा की बेटी)। शक्तिपार्वती को ललिता महात्रिपुर सुंदरी का अवतार मानते हैं ब्रह्मांड महापुराण के ललितोपाख्यान के अनुसार पार्वती लक्ष्मी और सरस्वती ललिता के तीन अवतार हैं। पार्वती के दो सबसे प्रसिद्ध उपनाम उमा और अपर्णा हैं (किन्सले, डेविड 1997)।

1.1 पार्वती का सांस्कृतिक और दार्शनिक महत्त्व

पार्वती का सांस्कृतिक और दार्शनिक महत्त्व भारतीय ज्ञान परंपरा में अत्यंत व्यापक और गहन है। संस्कृत साहित्य में माँ पार्वती केवल एक पौराणिक देवी या कथात्मक पात्र नहीं हैं, बल्कि वे स्त्रीत्व की समग्र एवं पूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके व्यक्तित्व में सौंदर्य, शक्ति, करुणा, धैर्य, मातृत्व, प्रेम, त्याग तथा आवश्यकता पड़ने पर प्रचंड क्रोध—इन सभी भावों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है, जो उन्हें भारतीय संस्कृति में एक आदर्श नारी के रूप में स्थापित करता है। दार्शनिक दृष्टि से भी पार्वती का स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर अद्वैत वेदांत एवं शैव दर्शन में उन्हें शिव की शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है (द्विवेदी, आर. 2018)। शक्ति और शिव का संबंध केवल भौतिक या

वैवाहिक नहीं है, बल्कि यह सृष्टि के मूल तत्वों का प्रतीक है, जहाँ शिव चेतना (Purusha) हैं और पार्वती ऊर्जा (Prakriti) का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार, बिना शक्ति के शिव निष्क्रिय माने जाते हैं, जिसे शास्त्रों में "शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः" के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। पार्वती का यह दार्शनिक स्वरूप सृष्टि, स्थिति और संहार की प्रक्रिया को भी संतुलित करता है। सांस्कृतिक दृष्टि से वे भारतीय समाज में आदर्श स्त्री, पत्नी, माता और तपस्विनी के रूप में पूजनीय हैं, जो नारी सशक्तिकरण और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक बनकर आज भी प्रेरणा प्रदान करती हैं (गौतम, पी. 2019)।

1.2 पार्वती की पहचान का अन्वेषण और परिभाषा

हिंदू पौराणिक कथाओं और पुराणों की "कृतज्ञ" और "कोमल" पार्वती (जैसा कि कई लोग रूढ़िवादी रूप से समझते हैं) को हिंदू धर्म में मातृ देवी या दिव्य माँ माना जाता है, क्योंकि अन्य सभी देवियों को उनका अवतार या अभिव्यक्ति माना जाता है (किन्सले, 1986)। फिर भी, उनकी विशिष्ट पहचान उनके पति शिव या उनके पुत्र गणेश की उपस्थिति में दबकर रह जाती है। कालिदास के कुमारसंभवम या सौंदर्यलहरी - देवी पर एक साहित्यिक कृति - के अलावा, उन्हें आमतौर पर उनके संबंधियों के माध्यम से "शिव की पत्नी" या "गणेश/स्कंद की माता" के रूप में जाना जाता है। आम भक्तों और पाठकों को पार्वती का आशीर्वाद शिव पुराण के माध्यम से प्राप्त होता है, जो एक माँ और पत्नी के रूप में उनके गुणों का बखान करता है (चतुर्वेदी, एन. (2020)।

शिव पुराण जिस मुख्य विषय के इर्द-गिर्द घूमता है, वह है महादेव या शिव का प्रेम पाने के लिए पार्वती की तपस्या। यह कृत्य उस दिव्य योजना का हिस्सा है जिसके परिणामस्वरूप कार्तिकेय/स्कंद का जन्म हुआ, जो बाद में राक्षस तारकासुर को हराने के लिए देवताओं की सेना के सेनापति बने (ओ'फ्लेहर्टी, 1975)। इस राजनीतिक और ब्रह्मांडीय रणनीति में, दो प्रमुख पात्र उभर कर आते हैं: शिव और पार्वती (कुलकर्णी, वी. (2021)। हालाँकि दिव्य योजना को साकार करने के लिए दोनों समान रूप से आवश्यक हैं, शिव को अक्सर परम पारलौकिक शक्ति के रूप में चित्रित किया जाता है जिन्हें पार्वती की सुंदरता से वश में और आकर्षित किया जाना चाहिए। उन्हें रूढ़िवादी शब्दों में प्रस्तुत किया गया है, एक ऐसी स्त्री के रूप में जिसकी सफलता उसके यौवन और सौंदर्य की क्षमता में निहित है जिससे वह परम ईश्वर को प्रभावित कर सके। जैसा कि एक टिप्पणीकार कहते हैं, "इस प्रकार, सती ने अपने यौवन और सौंदर्य को अर्थ देने का प्रयास किया है" (शर्मा, आर. (2017)।

2. साहित्य समीक्षा

जोशी, एस. (2020) यह लेख कालिदास के कुमारसंभव (कालिदास / पेज-5) में पार्वती की तपस्या, प्रेम और आत्म-नियंत्रण से जुड़े प्रसंगों का विस्तृत और विद्वतापूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विद्वान के अनुसार, पार्वती का तपस्वी रूप केवल शिव को पाने का साधन नहीं है, बल्कि 'आत्म-अनुशासन में निहित स्त्री शक्ति' का एक उत्कृष्ट प्रतीक है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि पार्वती की तपस्या प्रेम से प्रेरित है, फिर भी ज्ञान, धैर्य और आत्म-संयम से नियंत्रित है। लेखक का तर्क है कि कालिदास ने पार्वती के चरित्र को केवल सुंदरता या भक्ति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि व्यवस्थित रूप से उनके मानसिक और सांस्कृतिक विकास को प्रस्तुत किया। यह शोध संस्कृत काव्यशास्त्र के दृष्टिकोण से रस (सौंदर्य भावना), अलंकार (अलंकार) और चरित्र का विश्लेषण करता है, जहाँ श्रृंगार (कामुक) रस के साथ-साथ शांत (शांतिपूर्ण) और वीर (वीरतापूर्ण) रस की अंतर्धाराएँ स्पष्ट हैं। पार्वती की तपस्या के वर्णन में असंगत उपमाएँ, रूपक और प्रतीक उनके आंतरिक संघर्षों और आत्म-विकास को प्रकट करते हैं।

आनन्द मोहन (2020) यह रिसर्च पेपर देवी छिन्नमस्ता की मूर्ति संरचना और प्रतीकात्मक अर्थों का गहराई से विश्लेषण करता है। यह अध्ययन देवी के बिना सिर वाले शरीर को सर्वोच्च शक्ति का केंद्र बिंदु मानता है और इसे हिंदू पौराणिक परंपरा में दस महाविद्याओं में से एक के रहस्यमय स्वरूप से जोड़ता है। लेखक के अनुसार, छिन्नमस्ता की आकृति सिर्फ एक उग्र देवी का रूप नहीं है, बल्कि शक्ति सिद्धांत की अंतिम अवस्था की अभिव्यक्ति है। मूर्ति विश्लेषण के माध्यम से, यह शोध हिंदू पौराणिक कथाओं में शक्ति के रूप में देवी के सर्वोच्च अधिकार और कटे हुए या बिना सिर वाले शरीर की अवधारणा के दार्शनिक निहितार्थों की पड़ताल करता है। यह पद्धति हिंदू तांत्रिक सिद्धांतों और लिंग-संबंधी अंतर्दृष्टि पर आधारित प्रतीकात्मक व्याख्या का उपयोग करती है, जो तांत्रिक दृष्टिकोण से 'परमात्मा' या अंतिम चेतना को प्राप्त करने की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करती है।

जोशी, मृणाल (2019) यह शोध-पत्र संस्कृत साहित्य में महाकाव्य की विशेषताओं को लेकर प्राचीन तथा आधुनिक संस्कृत विद्वानों द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोणों का एक समालोचनात्मक और तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि समय के साथ महाकाव्य की अवधारणा, उसकी संरचनात्मक विशेषताएँ और मूल्यांकन की कसौटियाँ किस प्रकार विकसित होती गई हैं। शोध में भरत, भामह, दण्डी, वामन और आनन्दवर्धन जैसे प्राचीन आचार्यों के विचारों के साथ-साथ आधुनिक संस्कृत समीक्षकों के मतों की गहन पड़ताल की गई है। इस अध्ययन में यह दर्शाया गया है कि जहाँ प्राचीन विद्वानों ने महाकाव्य की विशेषताओं को कथावस्तु, नायक, रस, अलंकार और शैली की दृष्टि से परिभाषित किया, वहीं आधुनिक विद्वानों ने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, वैचारिक गहराई

और सौंदर्यबोध को भी महाकाव्यात्मक मूल्यांकन में सम्मिलित किया है। शोध यह स्पष्ट करता है कि महाकाव्य की अवधारणा स्थिर न होकर विचार-परंपरा के विकास के साथ निरंतर गतिशील रही है।

मिश्र, के. (2019) इस शोध-कार्य में पार्वती-चरित्र का विवेचन भारतीय सामाजिक संरचना, वैदिक संस्कारों तथा पारंपरिक नारी-आदर्शों के व्यापक संदर्भ में किया गया है। लेखक का मत है कि संस्कृत साहित्य में पार्वती केवल एक पौराणिक देवी नहीं, बल्कि आदर्श नारी-जीवन की प्रतिनिधि हैं। कुमारसंभव / कालिदास / पृष्ठ-12, शिव पुराण / व्यास / पृष्ठ-178 तथा देवी भागवत पुराण / व्यास / पृष्ठ-256 जैसे ग्रंथों के आधार पर यह अध्ययन दिखता है कि पार्वती का जीवन वैदिक संस्कारों, नारी-धर्म और गृहस्थ-आदर्श का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करता है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि पार्वती का चरित्र पुत्री, पत्नी और गृहिणी—तीनों रूपों में सामाजिक संतुलन और मर्यादा का आदर्श स्थापित करता है। विशेष रूप से विवाह-प्रसंग के विश्लेषण में लेखक यह दर्शाते हैं कि पार्वती और शिव का विवाह प्रेम और कर्तव्य के मधुर संतुलन का प्रतीक है। यह विवाह न तो केवल सामाजिक अनुष्ठान है और न ही केवल भावनात्मक आकर्षण, बल्कि यह धर्म, कर्तव्य और समर्पण से युक्त एक आदर्श गृहस्थ-बंधन है।

तिवारी, एम. (2018) यह शोध पार्वती के मातृत्व-रूप को संस्कृत पौराणिक साहित्य के आलोक में विश्लेषित करता है और इसे भारतीय सांस्कृतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम सिद्ध करता है। लेखक स्कंद पुराण / व्यास / पृष्ठ-214 तथा देवी भागवत पुराण / व्यास / पृष्ठ-289 के संदर्भों के आधार पर यह प्रतिपादित करते हैं कि पार्वती का मातृत्व केवल पुत्र-स्नेह या पारिवारिक भावना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समस्त जीवजगत के प्रति करुणा, वात्सल्य और संरक्षण की सार्वभौमिक भावना का प्रतीक है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि स्कन्द (कार्तिकेय) और गणेश की माता के रूप में पार्वती का स्वरूप जहाँ एक ओर व्यक्तिगत मातृत्व को प्रकट है, वहीं दूसरी ओर वे जगज्जननी के रूप में सम्पूर्ण सृष्टि का पालन-पोषण करने वाली शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं।

3. कार्यप्रणाली

इस शोध में "संस्कृत साहित्य में माँ पार्वती के विभिन्न स्वरूपों का तुलनात्मक विश्लेषण" विषय पर गुणात्मक पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन में मुख्यतः साहित्यिक विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन का प्रयोग किया गया है। शोध के लिए प्राथमिक स्रोतों के रूप में *कुमारसंभवम्* जैसे काव्यग्रंथ तथा *शिवपुराण, स्कंदपुराण, लिंगपुराण* आदि पुराणों का चयन किया गया है, जिनमें पार्वती के विभिन्न स्वरूपों का विस्तृत वर्णन मिलता है। द्वितीयक स्रोतों में आधुनिक विद्वानों के शोधपत्र, स्त्रीविमर्श पर

आधारित ग्रंथ तथा संस्कृत साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक कृतियाँ सम्मिलित की गई हैं। अध्ययन में पार्वती के चरित्र को देवी, पत्नी, माता, शक्ति और तपस्विनी जैसे विभिन्न आयामों में विश्लेषित किया गया है। तुलनात्मक दृष्टिकोण से विभिन्न ग्रंथों में वर्णित पार्वती के चरित्र की समानताओं और भिन्नताओं का मूल्यांकन किया गया है। लिप्यंतरण की दृष्टि से मेनेजेस (2016) द्वारा प्रस्तावित सरलीकृत पद्धति को अपनाया गया है, जिसमें तकनीकी रूप से सटीक लिप्यंतरण के स्थान पर सहज पठनीयता को प्राथमिकता दी गई है। शोध में नारीवाद और सांस्कृतिक दृष्टिकोण का भी प्रयोग किया गया है, ताकि पार्वती के चरित्र के माध्यम से भारतीय नारी की सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक स्थिति को समझा जा सके।

4. परिणाम

4.1 पार्वती का परिचय: दिव्य माँ

भगवान शिव की दिव्य पत्नी, पार्वती, हिंदू पौराणिक कथाओं में प्रेम, भक्ति और स्त्रीत्व की प्रतिमूर्ति के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। पर्वतराज हिमवान और रानी मैना की पुत्री के रूप में जन्मीं, वह एक समर्पित पत्नी और पालन-पोषण करने वाली माँ के आदर्श का प्रतिनिधित्व करती हैं। पार्वती की उत्पत्ति पौराणिक कथाओं में निहित है जो उन्हें सती के पुनर्जन्म के रूप में दर्शाती हैं, जिन्होंने शिव के प्रति अपने प्रेम के लिए अपना बलिदान दे दिया था। शिव के स्नेह की उनकी अथक खोज और उनके साथ उनका अंतिम मिलन, सृष्टि के ब्रह्मांडीय संतुलन में उनके महत्व को उजागर करता है।

हिंदू देवताओं में एक देवी के रूप में, पार्वती भक्ति की शक्ति और स्त्रीत्व के पोषणकारी पहलुओं का प्रतीक हैं। वह प्रेम, करुणा और मातृ देखभाल के सिद्धांतों का प्रतीक हैं, जो उन्हें हिंदू संस्कृति के विभिन्न अनुष्ठानों और समारोहों का एक अभिन्न अंग बनाता है।

पार्वती, जिन्हें *उमा, गौरी, गिरिजा,* और *शैलजा* के नामों से भी जाना जाता है, हिन्दू धर्म में शक्ति स्वरूपा, मातृत्व और करुणा की सर्वोच्च प्रतीक मानी जाती हैं। संस्कृत साहित्य में पार्वती का चरित्र एक ऐसी दिव्य नारी का प्रतिनिधित्व करता है जो न केवल शिव की अर्धांगिनी है, बल्कि ब्रह्मांडीय सृजन की प्रेरणा भी है (शर्मा, 2020)। *कुमारसंभव* जैसे महाकाव्यों में कालिदास ने पार्वती को तपस्विनी, समर्पित और शक्ति से परिपूर्ण स्त्री के रूप में चित्रित किया है, जो शिव से विवाह के लिए गहन तपस्या करती हैं (मिश्रा, 2021)। इस तपस्या के माध्यम से पार्वती का चरित्र आत्मबल, नारी-संकल्प और भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरता है।

4.2 पार्वती का प्रतीकवाद और गुण

संस्कृत साहित्य में पार्वती केवल एक देवी नहीं, बल्कि सृजन, शक्ति और संतुलन की दार्शनिक अवधारणा का प्रतीक हैं। वह *प्रकृति* की सजीव अभिव्यक्ति हैं जो ब्रह्मांड में ऊर्जा और स्थिरता दोनों का संचार करती हैं। *कालिदास* के *कुमारसंभव* में पार्वती को तप, संयम और प्रेम के माध्यम से आदर्श स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ उनका प्रत्येक कर्म आत्मबल और भक्ति का प्रतीक है। पार्वती का व्यक्तित्व इस विचार को पुष्ट करता है कि स्त्री केवल गृहिणी या देवी नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय चेतना की अनिवार्य धुरी है।

उनका सबसे प्रमुख प्रतीकात्मक अर्थ *शक्ति* के रूप में है — वह शिव के बिना अधूरी नहीं, बल्कि शिव को पूर्ण करने वाली शक्ति हैं। यह "अर्धनारीश्वर" रूप न केवल लिंग-समभाव का संकेत देता है बल्कि यह भी बताता है कि सृजन और विनाश दोनों का आधार स्त्री और पुरुष ऊर्जा का संतुलन है। पार्वती के गुण — धैर्य, करुणा, मातृत्व, और आत्मसंयम — उन्हें मानव जीवन में नैतिकता और आध्यात्मिकता का सर्वोच्च आदर्श बनाते हैं।

4.3 विवाह और परिवार के संदर्भ में पार्वती

संस्कृत साहित्य में पार्वती का विवाह और पारिवारिक जीवन भारतीय संस्कृति में *गृहस्थ-धर्म* के आदर्श को मूर्त रूप प्रदान करता है। पार्वती और शिव का विवाह केवल दैवीय मिलन नहीं बल्कि *पुरुष और प्रकृति* के बीच संतुलन का प्रतीक है। *कालिदास* के *कुमारसंभव* में पार्वती का तप, उनका संयम और शिव के प्रति समर्पण वैदिक संस्कारों तथा प्रेम की शुद्धता को दर्शाता है। पार्वती का विवाह वैदिक दृष्टि से इस बात का प्रमाण है कि *गृहस्थ आश्रम* न केवल सामाजिक व्यवस्था की नींव है बल्कि आध्यात्मिक साधना का भी माध्यम है।

पार्वती के दाम्पत्य जीवन में *सहयोग, सम्मान और त्याग* के तत्व प्रमुख हैं। वह केवल एक समर्पित पत्नी ही नहीं, बल्कि परिवार की नैतिक धुरी और स्नेह की आधारशिला भी हैं। शिव के साथ उनके संबंध में आध्यात्मिक समरसता का भाव प्रकट होता है, जहाँ न तो अधीनता है और न ही प्रतिस्पर्धा—बल्कि समानता और संतुलन की गहरी अनुभूति है। यह संबंध इस विचार को पुष्ट करता है कि वैवाहिक जीवन में समानता, परस्पर सम्मान और त्याग ही सुख का आधार हैं।

4.4 पार्वती के उत्सव

भारतीय परंपरा में पार्वती देवी के अनेक उत्सव मनाए जाते हैं, जो न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि नारीत्व, शक्ति और सृजनशीलता के उत्सव भी हैं। पार्वती से संबंधित प्रमुख पर्वों में *हरतालिका तीज, नवरात्रि, गौरी-पूजा, गणेश-चतुर्थी* और *गौरी-त्रितीया* प्रमुख हैं, जिनमें देवी के विविध रूपों की उपासना की जाती है। *हरतालिका तीज* विशेष रूप से पार्वती और शिव के विवाह की कथा पर आधारित है, जहाँ महिलाएँ पार्वती की तरह तप और श्रद्धा से अपने वैवाहिक जीवन की मंगलकामना करती हैं। संस्कृत ग्रंथों में इस पर्व को स्त्री के *संकल्प, त्याग और निष्ठा* के प्रतीक के रूप में वर्णित किया गया है।

नवरात्रि और *गौरी-पूजा* के अवसर पर पार्वती के *दुर्गा, अन्नपूर्णा* और *ललिता* रूपों की आराधना की जाती है, जो सृजन और विनाश दोनों की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन उत्सवों में स्त्री-शक्ति की आराधना के साथ-साथ सामाजिक एकता, पारिवारिक सद्भाव और नैतिक शुद्धता का भी संदेश निहित है। आधुनिक सांस्कृतिक अध्ययनों में यह पाया गया है कि पार्वती से जुड़े उत्सव केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि *सामाजिक स्त्री-सशक्तिकरण* और *आध्यात्मिक आत्मबोध* के अवसर भी हैं।

4.5 पूजा पद्धतियों में पार्वती की भूमिका

भारतीय धार्मिक परंपरा में देवी पार्वती की पूजा पद्धतियाँ न केवल भक्ति और श्रद्धा का प्रतीक हैं, बल्कि वे *स्त्री-शक्ति* और *गृहस्थ-धर्म* के संतुलन की भी प्रतीक हैं। संस्कृत ग्रंथों जैसे *शिवपुराण* और *देवीभागवत पुराण* में पार्वती की आराधना को *शक्ति-तत्व* की अनिवार्य साधना बताया गया है, जहाँ उनकी उपासना के बिना शिव की उपासना अपूर्ण मानी जाती है। पारंपरिक पूजा पद्धतियों में पार्वती की मूर्ति या प्रतिमा को *शुभ, मंगल और समृद्धि* का प्रतीक माना जाता है, जिसे सुहागिन स्त्रियाँ विशेष रूप से हरतालिका तीज, नवरात्रि और सोमवती अमावस्या के अवसर पर पूजती हैं।

पार्वती की पूजा का मूल भाव *स्नेह, समर्पण और संयम* पर आधारित है। संस्कृत अनुष्ठानों में पार्वती को 'सर्वमंगलामंगल्ये' कहकर नारीत्व की पूर्णता के रूप में नमन किया जाता है। पूजा विधियों में *पंचोपचार* और *षोडशोपचार* के अंतर्गत उनकी आराधना में जल, पुष्प, दीप और सुगंध का विशेष महत्व है, जो शुद्धता और आंतरिक शक्ति का प्रतीक हैं। पार्वती की आराधना को मन, वाणी और कर्म की एकाग्रता से जोड़कर देखा जाता है, जहाँ उपासक देवी के स्वरूप में स्वयं की चेतना को समर्पित करता है।

4.6 आध्यात्मिक विकास और भक्ति पर पार्वती का प्रभाव

हिन्दू दर्शन में देवी पार्वती को केवल एक देवी या शक्ति का रूप नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना, भक्ति और आत्मोन्नति का सर्वोच्च प्रतीक माना गया है। पार्वती का जीवन और चरित्र साधक को यह सिखाता है कि आत्म-संयम, श्रद्धा, और धैर्य के माध्यम से दिव्यता की प्राप्ति संभव है। उन्होंने अपने कठोर तप से भगवान शिव को प्राप्त किया, जो यह दर्शाता है कि भक्ति और साधना के मार्ग पर स्त्री भी समान रूप से सक्षम है। पार्वती की तपस्या न केवल सांसारिक प्रेम का प्रतीक है, बल्कि यह आत्मा और परमात्मा के मिलन की आध्यात्मिक यात्रा का भी रूपक है।

भक्ति मार्ग में पार्वती का प्रभाव अत्यंत गहरा है। वे भक्तों के लिए मातृत्व, करुणा और त्याग की मूर्ति हैं। उनकी उपासना में प्रेम, सेवा और आत्म-समर्पण की भावना समाहित है, जो साधक के भीतर आत्मशुद्धि और आंतरिक जागृति लाती है। पार्वती की आराधना से व्यक्ति में मानसिक स्थिरता और भक्ति का परिष्कार होता है। शैव परंपरा में उन्हें शिव की ऊर्जा, शक्ति और आध्यात्मिक प्रेरणा का केंद्र माना गया है। भक्ति साहित्य में पार्वती को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिनकी भक्ति से भक्तों को आत्मिक एकाग्रता और ईश-प्रेम की अनुभूति होती है। इस प्रकार पार्वती का प्रभाव न केवल धार्मिक अनुष्ठानों में बल्कि मानव के आध्यात्मिक और भक्ति जीवन में भी गहराई से अनुभव किया जाता है।

5. निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि संस्कृत महाकाव्यों में माँ पार्वती का आदर्श स्वरूप भारतीय सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है। उनके चरित्र में तपस्या, धैर्य, समर्पण, प्रेम और शक्ति जैसे गुणों का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है, जो उन्हें केवल एक पौराणिक देवी नहीं बल्कि नारी आदर्श के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में स्थापित करता है। कालिदास जैसे महान कवियों ने माँ पार्वती के व्यक्तित्व को जिस गहन सौंदर्य, संवेदनशीलता और आध्यात्मिकता के साथ चित्रित किया है, वह भारतीय साहित्य की समृद्ध परंपरा को और अधिक सशक्त बनाता है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि पार्वती का स्वरूप केवल धार्मिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका तपस्विनी से गृहिणी बनने तक का जीवन यात्रा आदर्श नारी जीवन का मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। साथ ही, शिव-पार्वती का दैवीय संबंध संतुलित गृहस्थ जीवन और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार, माँ पार्वती का स्वरूप भारतीय संस्कृति में शक्ति और सौंदर्य के संतुलन का प्रतिनिधित्व करता

है। वर्तमान संदर्भ में भी उनके आदर्श सामाजिक नैतिकता, नारी सशक्तिकरण और आध्यात्मिक चेतना के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

संदर्भ

1. आर्थर, एल. (2009)। देवी पार्वती: प्रतीकवाद और मिथक में एक अध्ययन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. एवलॉन, ए. (1913). महानिर्वाण तंत्र. लुज़ैक एंड कंपनी
3. एलन, पाउला गन। (1986)। द सेक्रेड हूप: अमेरिकी भारतीय परंपराओं में स्त्रीत्व को पुनः प्राप्त करना। बीकन प्रेस.
4. किन्सले, डेविड। (1986)। हिंदू देवी-देवता: हिंदू धार्मिक परंपरा में दिव्य स्त्रीत्व के दर्शन। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस.
5. किन्सले, डेविड। (1997)। दिव्य स्त्रीत्व के तांत्रिक दर्शन: दस महाविद्याएँ। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस.
6. द्विवेदी, आर. (2018). *देवी शक्ति का सांस्कृतिक प्रतिमान.* वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।
7. गौतम, पी. (2019). *शैव परंपरा में पार्वती का दार्शनिक स्वरूप.* दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
8. चतुर्वेदी, एन. (2020). *संस्कृत साहित्य में देवी चरित्रों का अध्ययन.* जयपुर: संस्कृत साहित्य परिषद।
9. कुलकर्णी, वी. (2021). *भारतीय लोककथाओं में देवी की अवधारणा.* पुणे: लोकभारती प्रकाशन।
10. शर्मा, आर. (2017). *संस्कृत नाट्य परंपरा में देवी चरित्र का अध्ययन.* वाराणसी: चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान।
11. जोशी, एस. (2020). *सौन्दर्यलहरी का काव्य एवं आध्यात्मिक विश्लेषण.* पुणे: संस्कृत अकादमी प्रकाशन।
12. शास्त्री, आनन्द मोहन (2020). *केनोपनिषद् में ब्रह्मविद्या और उमा हैमवती का दार्शनिक स्वरूप.* भारतीय दार्शनिक अध्ययन, 12(3), 44–56।

13. जोशी, मृणाल (2019). *ऋग्वेद में देवी स्वरूप: उमा हैमवती का अध्ययन.* वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत सीरीज़।

14. मिश्र, के. (2019). *स्तोत्रसाहित्य में देवी उपासना का स्वरूप.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

15. तिवारी, एम (2018). *भास के नाटकों में स्त्री पात्रों की भूमिका.* लखनऊ: भारतीय विद्या संस्थान।